"Beyond Fear: A Personal Journey to Soma"नामक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर मा0 राज्यपाल महोदय का सम्बोधन

(दिनांकः 16 फरवरी, 2025)

जय हिन्द!

मंच पर उपस्थित सभी गणमान्य अतिथिगण, विद्वतजन, और प्रिय मित्रों,

आज इस महत्वपूर्ण अवसर पर, हम सभी "Beyond Fear: A Personal Journey to Soma" नामक पुस्तक के विमोचन के साक्षी बनने के लिए एकत्रित हुए हैं। यह पुस्तक न केवल एक योद्धा की यात्रा को प्रस्तुत करती है, बल्कि आध्यात्मिक उत्कर्ष की खोज को भी बारीकी से समझाने का प्रयास करती है।

यह पुस्तक दो समानांतर मार्गों की कहानी है—एक बाहरी मार्ग, जिसमें लेखक ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अनेक युद्ध लड़े। और दूसरा, उनका आंतरिक आत्मिक विकास का मार्ग। यह एक असाधारण सैन्य आत्मकथा है, जिसमें जीवन के दोनों पक्षों को एक ही सूत्र में पिरोया गया है।

पुस्तक का प्रथम भाग लेखक की सैन्य यात्रा को दर्शाता है। उनकी सैन्य यात्रा 1971 के युद्ध से आरंभ हुई, जब उनका बैच युद्ध के समय अग्रिम मोर्चे पर था।

लेखक ने बांग्लादेश युद्ध, पंजाब में कठिन परिस्थितियों में आतंकवाद विरोधी ऑपरेशन, कारगिल की भीषण लड़ाई, और राजौरी–पुंछ क्षेत्र में विद्रोह को शांत करने जैसे अनेक सैन्य अभियानों में भाग लिया।

लेखक का अनुभव दर्शाता है कि युद्ध के मैदान में भी एक आंतरिक शांति प्राप्त की जा सकती है। यह शांति प्राप्त होती है ''सोमा'' के माध्यम से, जो एक प्रकार का आंतरिक अमृत है। योग और ध्यान के माध्यम से उत्पन्न यह सोमा न केवल आनंद और आत्मिक उन्नति प्रदान करता है, बल्कि भय और पीड़ा से भी मुक्त करता है।

पुस्तक का दूसरा भाग आध्यात्मिक अनुभवों पर केंद्रित है। लेखक ने अपने अनुभवों के आधार पर तांत्रिक कुंडलिनी और वैदिक कालाग्नि सिद्धांतों का एकीकरण प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक एक अभिनव दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें कुंडलिनी शक्ति का उदय और सोमा का अवतरण एक ही प्रक्रिया के दो पहलू माने गए हैं। लेखक ने इसे गंगा के पावन जल के समान बताया है, जो शरीर और मन की शुद्धि करता है और मानव विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है।

इस पुस्तक का मुख्य संदेश यह है कि डीएनए–जीवन की भाषा–संकेत–वेदों की भाषा से संबंधित है। यह एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है।

इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने भारतीय ब्रह्म–क्षत्र परंपरा और योद्धा–योगी के आदर्श को जीवंत कर दिया है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि ज्ञान और साहस का सही समन्वय मानवता के विकास का मूलमंत्र है।

इस पुस्तक के लेखक को उनके अनुभवों और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के लिए मैं हृदय से बधाई देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक हमें आत्म–खोज और अदम्य साहस की ओर प्रेरित करेगी।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर, मैं आप सभी से इस अद्भुत पुस्तक को पढ़ने का आग्रह करता हूँ। यह पुस्तक न केवल जीवन को समझने में मदद करेगी, बल्कि हमें अपने भीतर छिपे अमृत को खोजने के लिए प्रेरित भी करेगी।

जय हिन्द!